Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

ग्राम स्वराज एवं वैश्वीकरण के दौर में सोशल मीडिया

सोनू सिंह

शोधार्थी

राजनीति विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय

शोध सारांश

ग्राम स्वराज की कल्पना यह है की यह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी महत्त्व की जरूरतों के लिए अपने पडोसी पर भी निर्भर नहीं करेगा और फिर वह दूसरी जरूरतों के लिए जिनमे दुसरो का सहयोग अनिवार्य होगा वह परस्पर सहयोग करेगा इस तरह हर गाँव का पहला काम यह होगा की वह अपनी जरुरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। वैश्वीकरण आधुनिक विश्व की ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विभिन्न देश,संस्कृतियाँ और समुदाय परस्पर अधिक निकट रूप से जुड़ते हैं। इसका अर्थ केवल अंतरराष्ट्रीय व्यापार या पूँजी के आदान–प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मानव जीवन के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और तकनीकी पक्षों में बढ़ती हुई परस्पर निर्भरता को व्यक्त करता है।हम सभी जानते हैं कि सोशल मीडिया मुख्य रूप से युवाओं से जुड़ी चीज है। आबादी का युवा वर्ग सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करता है और इसके इस्तेमाल से उनकी रोजमर्रा की जिंदगी, दिनचर्या, व्यवहार, बातचीत के तरीके और रिश्तों पर असर पड़ रहा है, जिससे उनकी जीवनशैली बदल रही है।

मुख्य शब्द – ग्राम स्वराज, स्वराज, वैश्वीकरण, सोशल मीडिया, साइबर

ग्राम स्वराज

स्वराज शब्द एक पवित्र शब्द है, एक वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ है स्वशासन और आत्म–संयम, न कि सभी प्रतिबंधों से मुक्ति जिसका अर्थ अक्सर स्वतंत्रता होता है। वास्तविक स्वराज कुछ लोगों द्वारा अधिकार प्राप्त करने से नहीं बल्कि सभी द्वारा अधिकार का दुरुपयोग होने पर उसका विरोध करने की क्षमता प्राप्त करने से आएगा। दूसरे शब्दों में, स्वराज को जनता के अधिकार को विनियमित करने और नियंत्रित करने की उनकी क्षमता की भावना से सशक्त बनाकर प्राप्त किया जाना चाहिए। आदर्श गांव या ग्राम स्वराज की गांधीवादी दृष्टि यह है कि यह एक पूर्ण गणराज्य है, जो अपनी जरूरतों के लिए अपने पड़ोसियों से स्वतंत्र है और फिर भी कई अन्य लोगों के लिए परस्पर निर्भर है, जिनके लिए निर्भरता आवश्यक है(गांधी,1949)।

ग्राम स्वराज को समझने के लिए हम ग्राम स्वराज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आयाम को समझने का प्रयास करेंगे।

ग्राम स्वराज का राजनीतिक आयाम ग्राम स्वराज मुख्यत एक छोटे गणतंत्र की भांति होगा जिसके स्वंय के विदेश सम्बन्ध होंगे दूसरे समाजो से इसमें ग्रामीण का एक समुदाय होगा, जिसमे प्रत्येक ग्राम समाज अपने आप में राज्य होगा तथा सभी के पास स्वतंत्रता एवं आजादी होगी गाँधी जिस प्रकार राज्यविहीन समाज की बात करते थे ठीक उसी प्रकार विश्व समाज लागु होने से राज्यविहीन समाज स्थापित होगा वैसे भी भारत में ग्राम को प्रशासन की सबसे महत्वपूर्ण इकाई माना जाता है तथा ग्राम के शासन का स्वरूप प्राचीन काल से प्रजातांत्रिक था। प्राचीन भारत में विश्वास सत्ता के केन्द्रीकरण में न होकर सामूहिक स्वशासन में था जिसके लिए विकेन्द्रीकरण आवश्यक था उस

समय का प्रत्येक ग्राम स्वशासित था पंचायतो और सभाओ के शासन को व्यापक अधिकार देकर और विविध कार्य सौप कर शासन को व्यवहारिक रूप दिया गया था(गांधी,2016)।

ग्राम स्वराज का सामाजिक आयाम ग्राम स्वराज या ग्राम स्वशासन विकेंद्रीकृत, मानव केंद्रित और जाति आधारित शोषण रहित है। यह सरल ग्राम अर्थव्यवस्था की दिशा में काम करने और आत्मनिर्भरता हासिल करने पर जोर देता है जो हर गांव को एक आत्मनिर्भर स्वायत्त इकाई में परिवर्तित करने को बढ़ावा देता है जहां एक सम्मानजनक जीवन के लिए सभी प्रणालियां और सुविधाएं उपलब्ध हैं आत्मनिर्भर ग्राम का होना एक न्यायपूर्ण प्रणाली का परिचय देता है एवं अहिंसा युक्त व्यवस्था है। यह सभी नागरिको के लिए मार्गदर्शक होगा तथा भारत में रचनात्मक कार्यकर्ता और नीति निर्माता के लिए एक आदेश होगा।

ग्राम स्वराज का आर्थिक एवं सांस्कृतिक आयाम ग्राम स्वराज एक विकेंद्रीकृत, मानव–केंद्रित और गैर–शोषणकारी अवधारणा है जिसका उद्देश्य गांवों को आत्मनिर्भर, स्वायत्त संस्थाओं में बदलना है। जहां एक व्यक्ति और उनके समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिक भलाई शामिल है। ग्राम स्वराज जमीनी स्तर पर लोकतंत्र, आत्मनिर्भरता और स्वशासन के सिद्धांतों को बढ़ावा देता है। यह सतत विकास प्रथाओं के महत्व पर भी जोर देता है। यह स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, स्वच्छता और बुनियादी ढांचे के विकास जैसे क्षेत्रों में सेवा वितरण में सुधार ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक विकास को बढ़ावा देना सुनिश्चित करता है।

ग्राम स्वराज की कल्पना यह है की यह एक ऐसा पूर्ण प्रजातंत्र होगा जो अपनी महत्त्व की जरूरतों के लिए अपने पडोसी पर भी निर्भर नहीं करेगा और फिर वह दूसरी जरूरतों के लिए जिनमे दुसरो का सहयोग अनिवार्य होगा वह परस्पर सहयोग करेगा इस तरह हर गाँव का पहला काम यह होगा की वह अपनी जरुरत का तमाम अनाज और कपड़े के लिए कपास खुद पैदा कर ले। ग्राम स्वराज में जात पात या छुआछूत जैसी कोई चीज नहीं रहेगी असहयोग और सत्याग्रह के साथ अहिंसा की सत्ता ही ग्रामीण समाज का बल होगा और गाँव की रक्षा के लिए ग्राम सैनिक का एक दल रहेगा जिसे अनिवार्य रूप से गाँव के चौकी पहरे का काम करना होगा इसके लिए गाँव के ऐसे लोगो का रजिस्टर रखा जायेगा इस ग्राम शासन में व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर आधारित संपूर्ण प्रजातंत्र काम करेगा।

वैश्वीकरण एक जटिल आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक प्रक्रिया है। यह एक दो धारी तलवार है। इसकी वर्तमान बुनियाद पश्चिमीकरण आधुनिकीकरण पर आधारित है। इसके अंतर्गत बाजारों और प्रौधोगिकियों का एकाकीकरण हो रहें विश्व का ऐसा संकुचन हो रहा है। जिसके प्रत्येक कोने में हम इतनी जल्दी और सस्ते में पहुंच जाये जितने में पहले कभी संभव नहीं था। पूर्व की सभी अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओ की भांति यह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में घरेलु राजनीति, आर्थिक नीतियों तथा सभी देशो की विदेशी संबंधो को स्वरूप प्रदान कर रहा है वैश्वीकरण के आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनितिक और सामाजिक आदि विविध आयाम है।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया का मतलब है इंटरनेट पर आधारित ऐसी वेबसाइटें और ऐप्स जो यूजर्स को वर्चुअल कम्युनिटी और नेटवर्क में शामिल होकर कंटेंट बनाने, शेयर करने और उसका आदान–प्रदान करने की सुविधा देती हैं। पारंपरिक ब्रॉडकास्ट मीडिया जैसे टेलीविजन, रेडियो या अखबार के उलट, जहाँ बातचीत एकतरफा होती है, सोशल मीडिया दो–तरफा इंटरैक्टिव फॉर्मेट पर काम करता है। इससे इंटरनेट कनेक्शन वाला कोई भी व्यक्ति अपनी ऑडियंस बना सकता है, अपनी राय रख सकता है और दुनिया भर में रियल–टाइम में बातचीत कर सकता है।

सोशल मीडिया का आविष्कार अचानक नहीं हुआ था। यह विकास की एक लंबी प्रक्रिया थी, जिसके परिणामस्वरूप आज की सोशल मीडिया की दुनिया बनी है। डिवाइस और कनेक्शन के बिना सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। सोशल मीडिया तक पहुँचने के लिए एक डिवाइस की जरूरत होती है, क्योंकि यह असल में ऐसे सिग्नल होते हैं जिन्हें छुआ नहीं जा सकता। बहुत समय पहले, दुनिया को बदलने वाले क्रांतिकारी आविष्कारों में से एक कंप्यूटर का आविष्कार था। इसी डिवाइस के जरिए हम सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं। कंप्यूटर अब हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गए हैं। इस इलेक्ट्रॉनिक मशीन का हमारे समाज पर इतना गहरा असर है कि हम अपनी जिंदगी में कंप्यूटर के बिना एक दिन की भी कल्पना नहीं कर सकते। आजकल कंप्यूटर के बिना जिंदगी की कल्पना करना भी नामुमकिन है।

सोशल मीडिया हमारी रोजमर्रा की जिंदगी का एक हिस्सा है। हम इसके बिना एक दिन या कुछ घंटों की भी कल्पना नहीं कर सकते। यह हमेशा हमारे स्मार्टफोन में हमारे साथ रहता है। लोग जहाँ भी जाते हैं, वहाँ सोशल मीडिया का इस्तेमाल कर सकते हैं। यह कई काम पूरे करता है, जैसे सोशल नेटवर्किंग और बातचीत, पढ़ाई–लिखाई और करियर से जुड़ी जानकारी, और ऑनलाइन सेवाएँ जैसे शॉपिंग, बुकिंग, बिल पेमेंट वगैरह। आज की दुनिया में सोशल मीडिया के इस्तेमाल ने हमारे समाज में कई तरह से क्रांति ला दी है और इसका असर हमारी जिंदगी के लगभग हर पहलू पर पड़ा है। इसके अलावा, सोशल मीडिया ने हमारी रोजमर्रा की जीवनशैली को भी कई तरह से बदल दिया है। हम अनजाने में ही सोशल मीडिया से बनी जीवनशैली को अपना रहे हैं।

इसलिए, सोशल मीडिया के इस असर का विश्लेषण करना जरूरी है। हम सभी जानते हैं कि सोशल मीडिया मुख्य रूप से युवाओं से जुड़ी चीज है। आबादी का युवा वर्ग सोशल मीडिया का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करता है और इसके इस्तेमाल से उनकी रोजमर्रा की जिंदगी, दिनचर्या, व्यवहार, बातचीत के तरीके और रिश्तों पर असर पड़ रहा है, जिससे उनकी जीवनशैली बदल रही है। युवा आबादी कई क्षेत्रों में सोशल मीडिया के इस्तेमाल के बारे में तेजी से सीखती है, क्योंकि युवावस्था जीवन का वह दौर है जब लोग जिज्ञासु होते हैं और अपने आस–पास की चीजों के बारे में बहुत कुछ सीखते हैं। ये युवा देश का भविष्य हैं और उनका समाजीकरण उनके आस–पास के माहौल के साथ उनके मेल–जोल पर निर्भर करता है। इसमें कोई शक नहीं कि सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना आसान है और इससे हमारा समय, पैसा और ऊर्जा बचती है।

सोशल मीडिया के आने के बाद से इसने हमारे समाज को एक नए स्तर पर पहुँचाया है, लेकिन इससे जुड़ी कई कमियाँ और बुरी आदतें भी हैं। सोशल मीडिया के इस्तेमाल के कई सकारात्मक प्रभावों के साथ–साथ कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हैं, जैसे युवाओं में सोशल मीडिया की लत लगना, देश भर में साइबर अपराध होना आदि।
सोशल मीडिया से लोगो को जुड़ाव के लिए एक प्लेटफार्म मिल जाता है इसके माध्यम से जिस प्रकार अरस्तु ने बताया था लोगो को अवकाश की जरुरत होती थी राजनितिक सक्रियता के लिए उसी तरह वर्तमान में लोगो को राजनितिक सक्रियता दिखाने के लिए नए नए ऑनलाइन माध्यम मिल गए है जैसे ट्विटर ,फेसबुक ,ट्रुथ सोशल , मीडिया हाउसेस अगर हम इनको राजनीति से जोड़ने की कोशिश करे तो यह हमे हेबरमास के पब्लिक स्फीयर से जुड़ता हुआ दिखता है।

पब्लिक स्फीयर की चर्चाएँ सरकारी नीति दस्तावेजों, शैक्षणिक प्रकाशनों, भौतिक बैठकों, मास मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से होती हैं। आज सोशल मीडिया पब्लिक स्फीयर के लिए एक मुख्य क्षेत्र है। सोशल मीडिया पर लोग विभिन्न सोशल मीडिया वेबसाइटों के माध्यम से अपने मुद्दों पर चर्चा करते हैं और इससे समाज के लोगों को बहुत मदद मिलती है।

आइए अब हम समझते हैं कि ग्राम स्वराज के सपनों को पूरा करने में सोशल मीडिया और डिजिटल माध्यम कैसे बड़ी भूमिका निभा रहे हैं।

1. जवाबदेही और पारदर्शिता

पहले गाँवों में विकास कार्यों का लेखा–जोखा देखना आम नागरिकों के लिए बहुत मुश्किल होता था। सोशल मीडिया आम आदमी के सशक्त होने का साधन बन गया है जिसमे हम देख सकते जैसे आज ई–ग्राम स्वराज सरकार के इस डिजिटल पोर्टल और ऐप के जरिए ग्रामीण अपने पंचायत के बजट, खर्च और चल रहे प्रोजेक्ट्स की जानकारी सीधे फोन पर घर बैठे देख सकते हैं।

सोशल मीडिया ऑडिट गाँवों के युवा अब व्हाट्सएप और फेसबुक ग्रुप्स के जरिए विकास कार्यों की तस्वीरें (जियो–टैगिंग के साथ) साझा करते हैं। अधिकारियो की शक्ति को सोशल मीडिया के माध्यम से एक संतुलन बनाने की कोशिश की जा रही है जैसे वायरल होने का डर यदि कहीं सड़क या नाली का काम खराब हुआ है, तो उसकी फोटो सोशल मीडिया पर डालकर सीधे अधिकारियों और जनप्रतिनिधियों तक बात पहुंचाई जाती है।

2. त्वरित सूचना और सरकारी योजनाएं

गाँवों में अक्सर जानकारी के अभाव में लोग सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रह जाते थे। अब सरकार के विभिन्न विभागों के सोशल मीडिया हैंडल्स, यूट्यूब वीडियो और व्हाट्सएप ब्रॉडकास्ट के जरिए किसानों और ग्रामीणों को फसल बीमा, पेंशन योजना, मुफ्त राशन और स्वास्थ्य योजनाओं की सटीक जानकारी तुरंत मिल जाती है। लोगो ने सोशल मीडिया के माध्यम से खुद को जानकारी से जोड़ा है जैसे यूट्यूब के माद्यम से लोगो का सीखना आजकल आम बात जैसे लगती है कोई भी काम या चीज जो नहीं आती उसका यूट्यूब से सीख लेना जैसे खाना बनाना से लेकर कोई कलाकारी। मौसम के पूर्वानुमान, खेती की नई तकनीकों और मंडियों के भाव (जैसे ई–नाम पोर्टल की जानकारी) सीधे किसानों के मोबाइल स्क्रीन तक पहुंच रहे हैं।

3. ग्रामीण उद्यमिता और आत्मनिर्भरता

गांधी जी का मानना था कि ग्राम स्वराज तब आएगा जब ग्रामीण कुटीर उद्योग फलेंगे–फूलेंगे। सोशल मीडिया ने गाँवों के लिए बाजार की दूरी को खत्म कर दिया है लोकल से ग्लोबल भारत के दूरदराज गाँवों के हस्तशिल्प ,जैविक खेती के उत्पाद और पारंपरिक कपड़े अब इंस्टाग्राम और फेसबुक मार्केटप्लेस के जरिए सीधे शहरों और विदेशों में बेचे जा रहे हैं। लोगो के द्वारा लोकल उत्पाद भी संचार क्रांति आने के बाद व्हाट्सप्प के ऊपर फोटो भेज कर बेचना हो जैसे वीडियो कॉल का नया तरीका जिससे लोगो को बहुत मदद मिली है। रूरल इंफ्लुएंसर्स गाँव के युवा यूट्यूब और रील्स के जरिए अपनी संस्कृति, खेती और ग्रामीण जीवन को दुनिया के सामने रख रहे हैं, जिससे उन्हें घर बैठे कमाई और पहचान मिल रही है।

4. जनभागीदारी और डिजिटल ग्राम सभा

ग्राम स्वराज का मूल आधार ग्राम सभा है, जहाँ सब मिलकर फैसले लें। कामकाज या मजदूरी के सिलसिले में गाँव से बाहर रहने वाले लोग भी अब व्हाट्सएप ग्रुप्स और जूम,गूगल मीट के जरिए गाँव की बैठकों और समस्याओं पर अपनी राय रख पाते हैं। डिटिजल दुनिया से जुड़ने के बाद से लोगो का अन्य जगह से प्रभवित होकर यह देखना की उनके राजनितिक सिस्टम में क्या कमी है और इसको कैसे ठीक किया जा सकता तुलनात्मक तौर पर विश्लेषण करना एक नया तरीका बन गया है। स्थानीय स्तर पर अपनी समस्याओं (जैसे बिजली, पानी या सफाई) के लिए ग्रामीण सोशल मीडिया पर मुहिम चलाकर प्रशासन का ध्यान खींचने में सफल हो रहे हैं।

सोशल मीडिया की चुनौतियाँ

मानसिक स्वास्थ्य

एंग्जायटी और डिप्रेशन दूसरों से तुलना करने पर कमतर महसूस होने और मूड से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। लोगो की जीवन में हद से ज्यादा दखल हो जाना जैसे नींद में खलल स्क्रीन की नीली रोशनी मेलाटोनिन को कम

करती है और नींद की क्वालिटी खराब करती है। लत फीडबैक लूप डोपामाइन को बढ़ाते हैं, जिससे बार–बार इस्तेमाल करने की लत लग जाती है। बॉडी डिस्मॉर्फिया फिल्टर की गई तस्वीरें सुंदरता के अवास्तविक मानकों और खाने से जुड़ी समस्याओं को बढ़ावा देती हैं।

सामाजिक और व्यवहार संबंधी

साइबरबुलिंग पहचान छिपी होने के कारण ऑनलाइन परेशान करने, अलग–थलग करने और सबके सामने शर्मिंदा करने की घटनाएं बढ़ जाती हैं। कुछ छूट जाने का डर लगातार एंग्जायटी और प्लेटफॉर्म से जुड़े रहने की इच्छा पैदा करता है। खुद को अलग तरह से पेश करना आजकल एक आम बात समझी जाने लगी है जिसकी वजह से लोगो को पहचान का संकट उत्पन्न होने लगा है। अकेलापन ज्यादा वर्चुअल बातचीत का असल दुनिया में लोगों से कम जुड़ाव से संबंध होता है।

एकेडमिक और कॉग्निटिव (सोचने–समझने की क्षमता)

ध्यान की कमी तेजी से बदलने वाला कंटेंट लंबे समय तक ध्यान लगाने और गहराई से सोचने की क्षमता को कम करता है। रील्स को ज्यादा देखने से लोगो में फोकस करने की शक्ति में कमी आना आजकल बहुत ज्यादा देखा जा रहा है लोग घंटो रील्स देखते रहते है और इससे उनके सामाजिक रिश्ते खराब होने लगे है। टालमटोल प्लेटफॉर्म तुरंत खुशी देते हैं, जिससे पढ़ाई का समय कम हो जाता है। कम परफॉमेंस ज्यादा इस्तेमाल का सीधा संबंध कम से होता है।

सामाजिक जोखिम

ध्रुवीकरण एल्गोरिदम ऐसे इको चौंबर बनाते हैं जो राजनीतिक और सामाजिक बंटवारे को बढ़ावा देते हैं। गलत जानकारी साथियों के नेटवर्क के जरिए असली जानकारी की तुलना में फेक न्यूज तेजी से फैलती है। प्राइवेसी को हम वर्तमान समय में यह नहीं मान सकते की आसानी से मिल सकती है क्युकी वर्तमान में इंटरनेट पर लोगो ने अपने जीवन की हर चीज डाल राखी जिसके कारण फ्लिपकार्ट अमेजॉन मीशो ,मिंत्रा , जैसे ब्रांड्स द्वारा लोगो को उसी प्रकार के विज्ञापन दिखाई देना आजकल सबके साथ हो रहा जिसमे हमारी दी गयी जानकारी का उपयोग हमे प्रभावित करने के लिए किया जा रहा है। प्राइवेसी का नुकसान कमर्शियल डेटा माइनिंग टारगेटेड प्रोफाइलिंग के लिए निजी जानकारी का गलत इस्तेमाल करती है।

जहाँ सोशल मीडिया ग्राम स्वराज को मजबूत कर रहा है, वहीं फेक न्यूज (अफवाहें), साइबर फ्रॉड और डिजिटल डिवाइड (इंटरनेट की असमान पहुंच) जैसी चुनौतियाँ भी हैं। गाँवों में डिजिटल साक्षरता बढ़ाना बेहद जरूरी है ताकि तकनीक का इस्तेमाल सिर्फ मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सशक्तिकरण के लिए हो।

संक्षेप में कहें तो, सोशल मीडिया ने गाँव के आखिरी व्यक्ति के हाथ में एक ऐसा माइक दे दिया है, जिससे उसकी आवाज अब सीधे सरकार और दुनिया तक पहुँच सकती है। सोशल मीडिया आने से लोगो के पास एक दोस्त एक साथी,एक हथियार सभी आयाम बदले है इसको हम उस तरह से देख सकते की यह एक टूल है जिसका इस्तेमाल जनता जैसे चाइए वैसे कर सकती वो सर्जन का उपकरण हो या विनाश का शस्त्र कैसे भी हो सकता है । यही आधुनिक युग का वास्तविक डिजिटल ग्राम स्वराज है।

संदर्भ सूची

1. गाँधी,एम.के.(1949).हिन्द स्वराज.अहमदाबाद–14, नवजीवन प्रकाशन मन्दिर।
2. गाँधी,एम.के.(1953).हमारे गांवों का पुर्ननिर्माण. अहमदाबाद नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस।
3. गाँधी,एम.के.(2016). ग्राम स्वराज्य. दिल्लीप्रभात प्रकाशन।
4. मैक्लुहान, मार्शल (1964),ग्लोबल विलेज।
5. माथुर, बी. (2012), आर्थिक विकास का गांधीवादी विकल्प– इंडिया टुडे के लिए प्रासंगिक, जर्नल ऑफ गांधीयन स्टडीज।

6. सिन्हा, रमेश चन्द्र (2012), समकालीन भारतीय चिंतक, डी.के. प्रिंट वल्ड, नई दिल्ली।
7. स्टिग्लिटज, जोसेफ (2002), ग्लोबलाईजेशन एंड इट्स डिस्कन्टेन्ट ।
8. स्टिग्लिटज, जोसेफ (2006), मेकिंग ग्लोबलाईजेशन वर्क।
9. हरीश, रंजन (1996), द फीमेल फुटप्रिंट्स, स्टरलिंग पब्लिशर्स ।
10. हेट, सी.ए. (1969), चेंजिंग स्टेटस ऑफ वीमन इन पोस्ट इंडिपिंडेंट इंडिया, अलाइड पब्लिकेशन्स।
11. हेयूड, एंड्र (2002), पॉलिटिक्स, पालग्रेर्न।